डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक एवं शैक्षिक चिंतन का वर्तमान में उपादेयता

महाराजा महाविद्यालय उज्जैन

डॉ. श्याम कुमार मधुकर
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
शास. ठा. छेदीलाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जांजगीर (छ.ग.)

सरांशः– भारतीय संविधान के रचियता डॉ. बाबा भीमराव अम्बेडकर द्वारा नारी चिंतन, सामाजिक कुरीतियों, संवैधानिक विकास आदि कुरीतियों को दूर करने में उनका योगदान अद्वितीय है। यह शोध पत्र बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर का समाजिक एवं शैक्षिक चिंतन का वर्तमान समय में प्रासंगिता का वर्णन करता है।

Key Words– डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर' सामाजिक कुरीतियां, ज्ञान का प्रतीक, कोलंबिया यूनिवर्सिटी

––00––

डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के महान् जीवन का अंत आज लगभग 58 वर्षो से अधिक समय हो चुका है। तथापि उनका आदर्श, कार्य, तत्वज्ञान अधिकाधिक लोगों को प्रभावित कर रहा है। आज राजनैतिक, सामाजिक, शिक्षा साहित्य और कला के क्षेत्र में भी उनका प्रभाव मालूम होता है, उनके कार्य की प्रशंसा केवल उनके समाज के लोग नहीं करते, बल्कि संपूर्ण दलित समाज और अन्य समाज के लोग भी करते है। भारत से बाहर उनका संदेश केवल शोषितों तक सीमित न होकर वैश्विक औचित्य के रूप में देखा जाना प्रारंभ हो चुका है।

डॉ. बाबा साहब के विचारों में सभी साधनों का समावेश है, जिससे स्वंतत्रता, समता एवं बधुत्व आधार पर नये समाज का निर्माण हो सकें। साधनों के ध्येय से सामंजस्य होना चाहिए। डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर ने स्वयं अपने लिए व समाज के लिए जो कहा था, वह अनुकरणीय है ''जो कुछ मैं कर पाया हूं, वह जीवन भर मुशीबतें सहन करके अपने विरोधियों से टक्कर लेने के बाद ही कर पाया हूं।, जिस कारवां आप यहां देख रहे है, उसे मैं अनेक कठिनाईयों से यहां ले आया हूं। अनेकों अवरोधों, जो इस मार्ग पर आ सकते है, के बावजूद इस करवां को बढ़ते रहना है। अगर मानव समाज इसे आगे ले जाने में असमर्थ रहे तो, उन्हें इसे यही पर छोड़ देना चाहिए, जहां पर यह अब है, फिर किन्ही भी परिस्थितियों में इसे पीछे नहीं हटने देना है। मेरी जनता के लिए मेरा यही संदेश है।''

हम कह सकते है कि संघ का रचनात्मक कार्य व उसके सारे सदस्यों को सांघिक प्रयत्न धर्म व देश की खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने की दिशा में उठाया गया प्राथमिक किन्तु ठोक कदम है। आदर्श समाज का नमूना लोगों के सामने रखकर संपूर्ण भारत बनाने की दिशा में मैंने महत्वपूर्ण किया है, जिसे आज समाज को इसका अनुशरण करने की आवश्यकता है। ''वे धन्य है जो अनुभव करते है कि जिन लोगों में हमारा जन्म हुआ है, उनका उद्धार करना हमारा कर्तव्य है। धन्य है वो, जो गुलामी का खात्मा करने के लिए सबकुछ न्यौछावर करते है और धन्य है वे जो स्वयं के सुख–दुख, मान और अपमान, कष्ट और कठिनाईयों, आंधी और तूफान की परवाह किये बिना तब तक सतत् संघर्ष करते रहेंगे, जब तक हमें अपने मूल मानव होने के कर्तव्यों का मानवीय जन्म सिद्ध अधिकार न मिल जाये।''

एक व्यक्ति जन्म से ही अंधा था, उसने कहा ''मैं प्रकाश और रूप रंग के संसार को नहीं मानता। फिंके या चमकीले रंग कुछ नहीं होते। सूरज नहीं होता। चांद और तारे नहीं होते। किसी ने इन्हें नहीं देखा।'' उनके दोस्तों ने उन्हें समझाया–बुझाया, किन्तु वह अपनी बात पर अड़ा रहा। उसकी आपत्ति थी, ''तुम जो कहते हो कि तुम देखते हो, वह भ्रम है। यदि रंग होते, तो मैं उन्हें छू सकता। उनकी कोई वास्तविकता नहीं है और वे सच नहीं है। हर वास्तविक वस्तु का भार होता है, लेकिन तुम जहां रंग देखते हो, वहां कोई भार महसूस नहीं होता।'' उन्हीं दिनों एक चिकित्सक इस जन्मांघ व्यक्ति को देखने गया। उसने चार चूर्ण मिलाये और उनका लेप बनाकर उस जन्मांघ व्यक्ति के मोतियाबिंद पर लगाया। उनका सलेटी आवरण पिघल गया और आंखे देखने लगी तथागत चिकित्सक है। मोतियाबिंद ''अहं'' के विचार का भ्रम है और चार चूर्ण आर्यसत्य है।

''न वंश–परम्परा से, न अच्छी शक्ल होने से और न धन होने से कोई आदमी अच्छा या बूरा होता है। अच्छे वंश में उत्पन्न हुआ एक आदमी भी हत्यारा होता है, चोर होता, व्यभिचारी होता है, झूठा होता है, चुगलखोर होता है, कठोर बोलने वाला होता है, बकवास करने वाला होता, लोभी होता है, द्वेषी होता है और मिथ्या–दृष्टि वाला होता है। इसीलिए मैं कहता हूं कि अच्छे वंश में उत्पन्न होने से ही कोई आदमी अच्छा नहीं होता और अच्छे वंश में उत्पन्न होने पर भी एक आदमी इन सभी दोषों से युक्त होता है। इसलिए मैं यह भी नहीं कहता हूं कि अच्छे वंश में उत्पन्न होने से ही कोई आदमी अच्छा नहीं होता।''

उक्त विषय का मुख्य उपयोगिता यह है कि मानव समाज द्वारा उपर्युक्त सिद्धांतों का अनुशरण करते हुए अपने जीवन को बहुआयामी, विकसित व देश विकास की दिशा तय कर एवं शिक्षा के गुणवत्ता व व्यापकता में भागीदारी का निर्वहन कर सकते है।

अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा ने बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर को Symbol of Knowledge' (ज्ञान का प्रतीक) कहा है। वर्तमान समय में कोलब्यिा यूनीवर्सिटी में शताब्दी के प्रमुख छात्रों के बीच बाबा साहेब भीमराम अम्बेडकर की प्रतिमा लगी हुई है, जिसे शताब्दी में ज्ञान का महानायक कहा जाता है।

क्या भारत फिर आजादी खो देगा?– डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर

आज से लगभग 66 साल पूर्व 25 नवम्बर 1949 को डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर ने संविधान सभा के सामने भारतीय लोकतंत्र के सामने खड़े खतरों की जो चेतावनी दी थी, हम उस व्याख्यान के अंश प्रस्तुत कर रहे है।

भारत अपना आजादी कायम रख सकेगा, कि इसे फिर खो देगा? यही पहली बात है, जो मेरे दिमाग में आती है। ऐसा नहीं है कि भारत इससे पहले कभी आजाद देश था, ही नही। लेकिन यही बात है कि इसने अपने आजादी एक बार खोयी है। क्या दोबार भी ऐसा ही होगा? यही वह सवाल है, जो मुझे भविष्य के लिए बेचैन करता है। मुझे इससे भी ज्यादा बैचेनी इस बात से होती है कि हमने एक बार अपनी आजादी खोयी है। इतना ही नही, बल्कि हमने अपनी आजादी, अपने ही कुछ लोगों की बेईमानी और विश्वासघात से खोयी है।

मेरी विकलता और भी बढ़ जाती है जब मैं देखता हूं कि जातियों और संप्रदायों के रूप में मौजूद हमारे पुराने शत्रुत्व है ही, परस्पर विरोधी राजनीतिक हेतुओं को लेकर चलने वाली अनेक राजनीतिक पार्टियां भी हमारे साथ हो गई हैं। क्या भारतीय लोग अपने मतवादों से देश को बड़ा मानकर चल सकेंगे। मैं नहीं कह सकता हूं कि यदि राजनीतिक दलों ने अपने मतवादों को देश से ऊपर जगह दी तो, हमारी आजादी दूसरी बार खतरे में पड़ेगी और शायद हमेशा के लिए हम उसे खो देंगे। इस होनी से हमें, हमेशा सावधान रहना होगा। हमें अपने खून की आखरी बूंद से भी देश की आजादी की रक्षा का संकल्प लेना होगा। ऐसी बात नहीं कि भारत को मालूम नहीं है, कि लोकतंत्र क्या होता है। एक वक्त था जब भारत में

गणतंत्रों की भरमार थी और जहां राजतंत्र था भी, वहां भी या तो उनका चुनाव होता था या वे सीमित अर्थो में ही राजतंत्र थे, ऐसा भी नहीं है कि भारत के लिए संसद कोई नई चीज है और यह इसकी प्रक्रियाओं अनभिज्ञ है। हमारे प्राचीन भिक्षु संघों का एक अध्ययन बताता है कि वहां न केवल एक संसद होती थी। संघ लोक सभा का ही तो एक रूप थे, बल्कि आज के आधुनिक लोकतंत्र में जिन प्रक्रियाओं की जितनी चर्चा हम करते है, उनका भी वहां ठीक–ठीक पालन होता था। उस लोकतांत्रिक प्रणाली को भारत ने खो दिया। क्या यह इसे फिर से खोएगी? मैं नहीं कह सकता पर भारत जैसे देश में इस नवजात प्राणी के साथ ऐसा संभव है कि ढांचा लोकतंत्र का बना रहे और उसकी आत्मा तानाशाही का रूप ले ले।

यदि हम लोकतंत्र का ढांचा ही नहीं, उसकी आत्मा भी बचाना चाहते है तो हमें क्या करना चाहिए? पहली बात मेरे दिमाग में आती है वह यह कि हमें अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संवैधानिक तरीकों को मजबूती से पकड़ कर रखना चाहिए। इसका मतलब यह है कि हमें क्रांति के खूनी रास्ते को छोड़ देना चाहिए। इसका मतलब यह है कि हमें सिविल नाफरमानी का, असहयोग का और सत्याग्रह का रास्ता छोड़ देना चाहिए। जब हमारे सामजिक, आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति संवैधानिक तरीकों से संभव ही न हो तब तो, गैर–संवैधानिक तरीकों की तरफ जाने का औचित्य है, पर जब ऐसी स्थिति नहीं है, तब हमारे पास क्या तर्क बचता है।

दूसरी सावधानी हमें क्या बरतनी चाहिए? मैं जॉन स्टूअर्ट मिल के शब्दों मे कहूंगा कि हमें ''महान से महान आदमी के चरणों में भी अपनी स्वतंत्रता को अर्पण नहीं करना चाहिए या उसे ऐसी शक्ति नहीं देनी चाहिए कि वह हमारी संस्थाओं को बर्बाद कर दे।'' इसमें कुछ गलत नहीं है कि हम देश सेवा में जीवन लगा देने वाले महान लोगों के ऋणी हो, लेकिन इसकी भी एक सीमा होगी ना! आयरिश देशभक्त डनियल ओ कोनेल ने बहुत अच्छा कहा है कि किसी भी आदमी को अपने आत्मसम्मान की कीमत किसी का ऋणी नहीं होना चाहिए। किसी भी स्त्री को अपनी पवित्रता की कीमत पर किसी का ऋणी नहीं होना चाहिए और किसी भी राष्ट्र को अपने आजादी की कीमत पर किसी का ऋणी नहीं होना चाहिए। भारत क संदर्भ किसी भी दूसरे देश की अपेक्षा इस उक्ति का ज्याद महत्व है। हमारे देश में भक्ति कहिए या कि नायक–पूजा कहिए इसकी राजनीति में बड़ी पैठ है। मुक्ति के लिए धर्मो में भक्ति के लिए भले ही कोई जगह हो, राजनीति में भक्ति या 'हीरोवर्शिप' पतन का और तानाशाही का रास्ता है।

तीसरी सावधानी यह कि हमें मात्र राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र में भी बदलना है। राजनीतिक लोकतंत्र की बुनियाद में यदि सामाजिक लोकतंत्र नहीं रहेगा, तो वह टिक नहीं सकेगा। सामाजिक लोकतंत्र का मतलब क्या? एक ऐसा सामाजिक जीवन जो स्वतंत्रता, समता और भाईचारे को जीवन का आधारभूत तत्व मानता हो। भारत की तरफ की देखे तो, हमें स्वीकार करना ही होगा कि इनमें से दो तत्वों का देश में पूर्ण अभाव है। एक है समता, हमारा भारतीय समाज असमानता के कई स्तरों का सिद्धांत मानकर चलता है, जिसका मतलब होता है कुछ के लिए आरोहण बाकी के लिए गिरावट।

राजनीति में हमें समता मिलेगी। समाज में समानता होगी। राजनीति में हमें एक आदमी : एक वोट, और वोट एक कीमत का सिद्धांत स्वीकार लेंगे पर सामाजिक और आर्थिक व्यवहार में हम एक आदमी, एक मूल्य का सिद्धांत स्वीकार कर सकेंगे। ऐसे समाज की स्थिति क्या होगी, अपनी सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में समाज कब तक असमानता को अस्वीकार करते रहेंगी। इस विरोधी चलन को हमें शीघ्रता शीघ्र समाप्त करना होगा, अन्यथा जो गैर बराबरी के शिकार है, वे राजनीतिक लोकतंत्र का वह ढांचा ही ढहा देंगे, जिसे इस संविधान सभा ने इतनी मेहनत से तैयार किया है।

दूसरी बात भाईचारे का सिद्धांत–इस मतलब क्या है? भाईचारे का मतलब है सभी भारतीयों के बीच अपनेपन की भावना जैसे सारे भारतीय एक इंसान है। आखिर लोग ही तो है, जो हमारे सामाजिक जीवन को सुदृढ़ और एकताबद्ध करते है। इस भावना का विकास करना कठिन काम है। मेरा ख्याल है कि इस बात को दोहराने में कि हम एक राष्ट्र है। एक बड़ा भ्रम पालने जैसी बात हो जाती है। कई हजार जातियों में बटे लोग, एक राष्ट्र कैसे हो सकते है? जितनी जल्दी हमें इस बात का अहसास हो जाये इस सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अर्थो में हम एक राष्ट्र है, ही नहीं उतना ही अच्छा है। ऐसा अहसास हो जाए तो हम इसकी जरूरत महसूस करेंगे कि हम कैसे एक राष्ट्र बने, फिर हम उसको रास्तों की तलाश करेंगे। इस पाना बहुत कठिन होगा। अमेरिका में यह जितना कठिन साबित हुआ था। उससे कही ज्यादा यहां साबित होगा। अमेरिका के सामने जाति की समस्या नहीं थी। भारत में जातियां है और ये जातियां देशद्रोही साबित होती है, जो कि ये सामाजिक जीवन में भेद पैदा करती है ये इसलिए जीवन में भेद पैदा करती है। यह इसलिए भी देशद्रोही है कि ये जातियों के बीच में नफरत और घृणा पैदा करती है। कुछ विचार है कि मेरे उन चुनौतियों के बारे में जो हमारे सामने है। कुछ लोगों को ये पसंद नहीं आयेंगे, पर यह सच है कि पिछड़े वर्ग के लोग शासित होते–होते थक गये है। वे आत्म शासन के लिए बेताब है। पिछड़े वर्गो में यह जो चेतना जगी है, उसे हमें वर्ग–संघर्ष में बदलने नहीं देना चाहिए। यह तो घर में विभाजन जैसे बात होगी और अब्राहम लिंकन कहा है कि न कि जो घर विभाजित होता है वह ज्यादा दिनों का टिक नहीं सकता।

इसमें क्या शक है कि स्वतंत्रता का अवसर खुशी का अवसर है। लेकिन यही स्वतंत्रता हम पर कुछ कहरी जिम्मेदारी भी लादती है, यह हमें नहीं भूलना चाहिए। स्वतंत्रता पाने के साथ ही अब हम हर गलत काम के लिए अंग्रेजों को दोषी नहीं ठहरा सकते। अब तो हर गलती की जिम्मेदारी हमें ही उठानी होंगी। बातें गलत रास्ते चली जायें, इसका खतरा बढ़ गया हैं। वक्त तेजी से बदल रहा है। हमारे लोग भी नयी विचारधाराओं के प्रवाह में बहने लगे हैं। वे जनता द्वारा जनता के लिए सरकार चाहते हैं–वह जनता द्वारा और जनता की है या नहीं, इसके प्रति उनकी उदासीनता बढ़ती जा रही है। यदि हम इस संविधान को बचाना चाहित हैं, जिसमें हमने जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिए सरकार की कल्पना की है तो हमें अपने रास्तों के संकट को पहचानने से हिचकिचाना नहीं चाहिए और उन्हें दूर करने के अपने प्रयास में शिथिलता नहीं आने देनी चाहिए। देश की सेवा का यही एक मार्ग है। मैं इससे अच्छा कोई रास्ता नहीं जानता हूं।

संदर्भ ग्रंथः–

01. त्रैमासिक पत्रिका–बुद्धयान

02. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जीवन संघर्ष–राहुल संस्कृतायन

03 http://www.gyanipandit.com/dr-br-ambedkar-biography-in-hindi

04. https://drambedkarbooks.com/2016/01/31/pdf-writings-sppeches-of-dr-babasaheb-ambedkar/

05. http://pdfbooks.ourhindi.com/2015/02/dr-bhim-rao-ambedkar-ki-jivani-hindi.html

06. http://www.columbia.edu/itc/mealac/pritchett/00ambedkar/

07.Ambedkar,B.R.-Annihilation of caste,1936